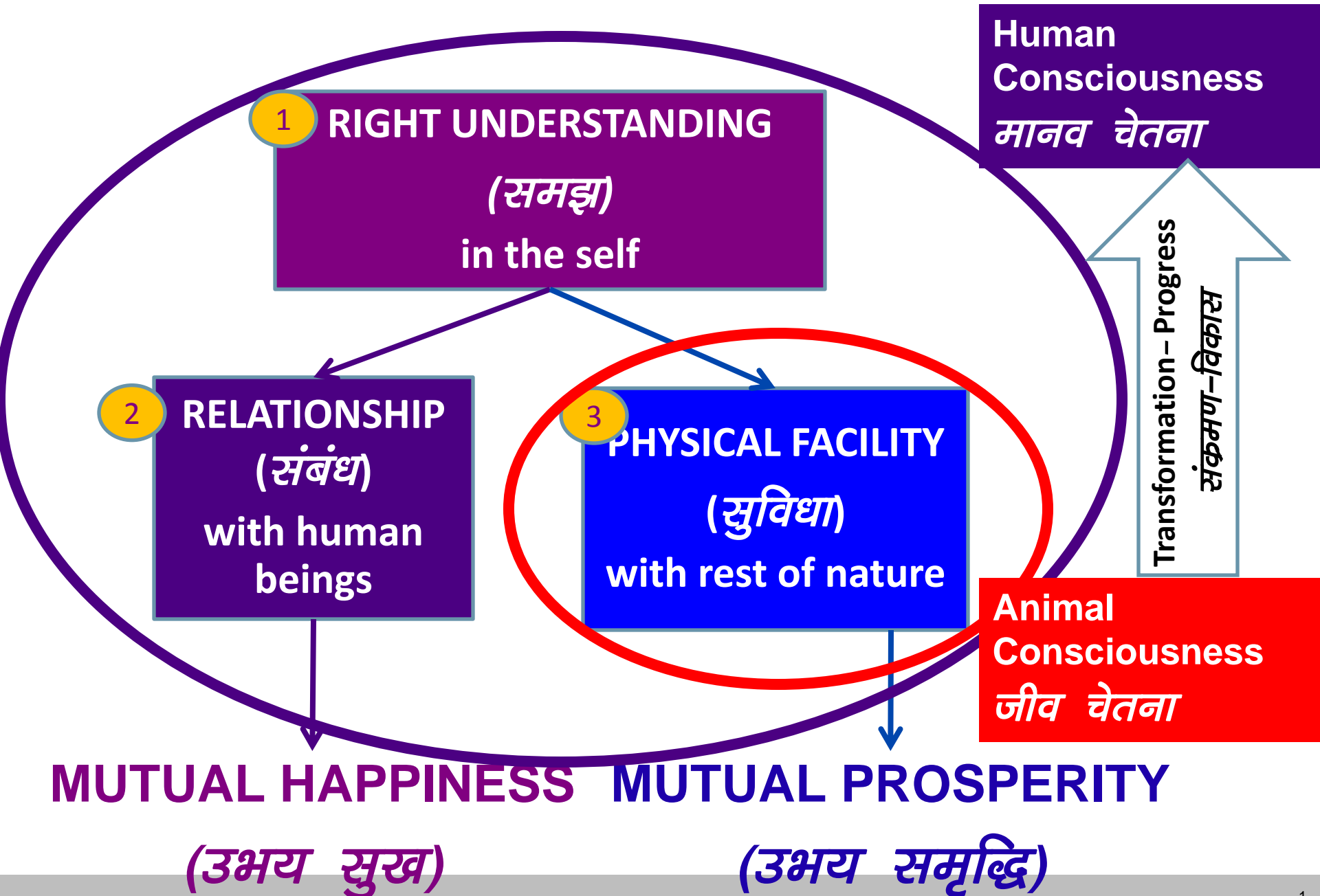


मानव की मूलभूत चाहना: निरंतर सुख एवं समृद्धि



What is this Workshop

1. यह संवाद की प्रक्रिया है। यह संवाद आपके और मेरे बीच शुरू होता है।
2. यह स्वयं में संवाद की प्रक्रिया है। यह संवाद आपके स्वयं में चलने लगता है।

What I am

जैसा मैं हूँ

Desire, Thought...



What is Naturally Acceptable to Me

जैसा होना मुझे सहज स्वीकार्य है

Natural Acceptance

Harmony संगीत

Contradiction अंतर्विरोध

संबंध

संबंध

विरोध

सहज स्वीकृति

स्वतंत्रता—सहजता पूर्वक जो स्वीकार्य होता है

सहज स्वीकृति

जैसे—

संबंध

भोजन — स्वास्थ्य के लिए

मोबाइल — संवाद के लिए

स्वीकृति

स्थिति—परिस्थितिवश, अभ्यासवश जो स्वीकार लेता हैं

मान्यता(दबाव), संवेदना (प्रभाव), सहज स्वीकृति (स्वभाव),

कभी संबंध, कभी विरोध

भोजन — कभी स्वास्थ्य के लिए
— कभी केवल स्वाद के लिए

मोबाइल — कभी संवाद के लिए
— कभी सम्मान के लिए

अध्ययन – स्वयं में

What I am

जैसा मैं हूँ
इच्छा, विचार

Dialog

संवाद

What is Naturally Acceptable

जैसा होना मुझे सहज स्वीकार्य है
सहज स्वीकृति

Split Personality
-Schizophrenia

कभी संबंध

संबंध

कभी विरोध

Harmony संगीत

→ Happiness सुख → स्वतंत्रता

Contradiction अंतर्विरोध → Unhappiness दुख → परतंत्रता

Happiness = To be in a state of Harmony

सुख = संगीत में, व्यवस्था में जीना

Unhappiness = To be forced to be in a state of Contradiction

दुख = अंतर्विरोध में, अव्यवस्था में, जीने के लिये बाध्य होना

अध्ययन प्रक्रिया

1. यह एक संवाद की प्रक्रिया है।
2. यह स्वयं (जैसा मैं हूँ) की अपने स्वत्व (जैसा होना मुझे सहज स्वीकार्य है) से संवाद की प्रक्रिया है।
3. यह स्वयं में, स्वयं के अधिकार पर जाँचने की प्रक्रिया है।
4. यह स्वयं को एवं स्वयं के माध्यम से संपूर्ण अस्तित्व को समझने की प्रक्रिया है।
5. यह अस्तित्व की हर इकाई के साथ अपने संबंध को पहचानने एवं तदनुसार जीने की प्रक्रिया है।
6. यह मानवीय आचरण को समझने एवं तदनुसार जीने की प्रक्रिया है।
7. यह स्वयं में स्वतंत्रता एवं समग्र अस्तित्व के साथ स्वराज्यपूर्वक जीने की प्रक्रिया है।

स्वत्व → स्ततंत्रता → स्वराज्य

Scope of this Workshop

अपनी सहज स्वीकृति को देखना / समझना
जैसा होना मुझे सहज स्वीकार्य है

स्वत्व



सहज स्वीकृति के आधार पर भाव, विचार
स्वयं में व्यवस्थापूर्वक जीना

स्वतंत्रता



दूसरों के साथ संबंध / व्यवस्थापूर्वक जीना – संपूर्ण अस्तित्व के साथ

स्वराज्य

1. अध्ययन वस्तु:

a. चाहना - लक्ष्य

सुख, समृद्धि → निरंतरता

b. करना - कार्यक्रम

चाहना को सुनिश्चित करने की विधि

2. अध्ययन विधि

जाँचना

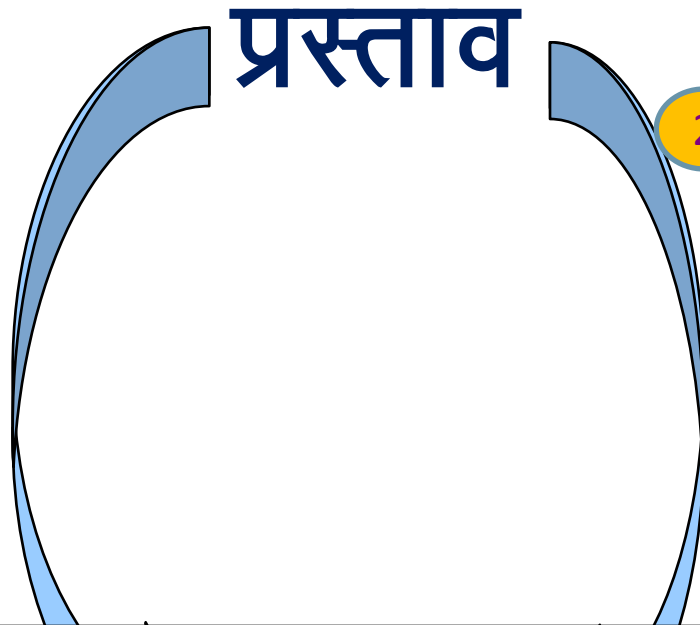
स्वयं के अधिकार पर

प्रस्ताव है (मानें नहीं)

जाँचें – स्वयं के आधार पर।

1 जाँचें

अपनी सहज
स्वीकृति के
आधार पर



2

जीकर देखें

2a

व्यवहार
मानव के साथ

उभय सुख

2b

कार्य
शेष प्रकृति के साथ

उभय समृद्धि

आपको क्या सहज स्वीकार्य है

स्वयं के अधिकार पर जाँचना या
कही हुई बातों को सिर्फ मान लेना

सुख

मैं जिस भी स्थिति – परिस्थिति में
जीता हूँ

अगर उसमें संगीत है, व्यवस्था है,

तो ऐसा जीना मुझे सहज स्वीकार्य होता
है।

इस स्वीकृति के भाव में जीना सुख है।

संगीत में, व्यवस्था में जीना सुख है।

दुःख

मैं जिस भी स्थिति – परिस्थिति में
जीता हूँ

अगर उसमें अंतर्विरोध है, अव्यवस्था है,

तो ऐसा जीना मुझे सहज स्वीकार्य
नहीं होता है।

इस अस्वीकृति के भाव में जीने के
लिए बाध्य होना दुःख है।

अंतर्विरोध में, अव्यवस्था में जीने के
लिए बाध्य होना दुःख है।

मैं जिस स्थिति / परस्थिति में जीता हूँ,

अगर उसमें संगीत है / व्यवस्था है,

तो ऐसा जीना मुझे सहज स्वीकार होता है।

इस स्वीकृति के भाव में जीना सुख है।



संगीत में / व्यवस्था में जीना सुख है।



सुख = व्यवस्था

जीने का फैलाव

1. व्यक्ति के स्तर पर
2. परिवार के स्तर पर
3. समाज के स्तर पर
4. प्रकृति / अस्तित्व के स्तर पर

निरंतर सुख=इन सभी स्तर पर व्यवस्था को समझना एवं व्यवस्था में जीना

1. स्वयं में व्यवस्था
2. परिवार में व्यवस्था
3. समाज में व्यवस्था
4. प्रकृति / अस्तित्व में व्यवस्था

सुख = व्यवस्था

जीने का फैलाव

1. व्यक्ति के स्तर पर
2. परिवार के स्तर पर
3. समाज के स्तर पर
4. प्रकृति / अस्तित्व के स्तर पर

निरंतर सुख = इन सभी स्तर पर व्यवस्था को समझना एवं व्यवस्था में जीना

1. स्वयं में व्यवस्था
2. परिवार में व्यवस्था
3. समाज में व्यवस्था
4. प्रकृति / अस्तित्व में व्यवस्था

चारों स्तर पर व्यवस्था को समझना

1. स्वयं में व्यवस्था
2. परिवार में व्यवस्था
3. समाज में व्यवस्था
4. प्रकृति / अस्तित्व में व्यवस्था

समझने की वस्तु

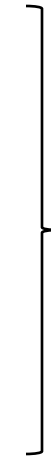
चारों स्तर पर व्यवस्था में जीना

1. व्यक्ति में
2. परिवार में
3. समाज में
4. प्रकृति / अस्तित्व में

जीने का फैलाव

चारों स्तर पर व्यवस्था को समझने में सहयोग प्रदान करना

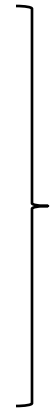
1. स्वयं में व्यवस्था
2. परिवार में व्यवस्था
3. समाज में व्यवस्था
4. प्रकृति / अस्तित्व में व्यवस्था



प्रस्ताव

चारों स्तर पर व्यवस्था को समझना एवं व्यवस्था में जीना

1. व्यक्ति में
2. परिवार में
3. समाज में
4. प्रकृति / अस्तित्व में



1

**A. स्वयं के अधिकार पर
जाँचना**

2

B. जीकर देखना



समझ

मानव की चाहना = सुख, समृद्धि → निरंतर

सुख = संगीत / व्यवस्था में जीना

जीने का फैलाव = 4 स्तर पर (मानव, परिवार, समाज, प्रकृति / अस्तित्व)

निरंतर सुख = इन स्तर पर संगीत / व्यवस्था को समझना एवं

हेतु कार्यक्रम = इन स्तर पर संगीत / व्यवस्था में जीना

1. मानव में
2. परिवार में
3. समाज में
4. प्रकृति / अस्तित्व में

अध्ययन प्रक्रिया = स्वयं के अधिकार पर जाँच करना

इस कार्यशाला का आशय स्वयं के अधिकार पर जाँच परख की प्रक्रिया का आपमें शुरू होना है।

स्वयं में अध्ययन

1. अध्ययन वस्तु:

a. चाहना - लक्ष्य

सुख, समृद्धि → निरंतरता

b. करना - कार्यक्रम

सुख = संगीत में, व्यवस्था में जीना



व्यवस्था को समझना, व्यवस्था में जीना

1. मानव में व्यवस्था
2. परिवार में व्यवस्था
3. समाज में व्यवस्था
4. प्रकृति/अस्तित्व में व्यवस्था

2. अध्ययन विधि

